www[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 39
सृष्टि संवत् 1960853114
29 दिसम्बर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 39, 26/29 दिसम्बर 2013 तदनुसार 15 पौष सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ वेदोद्यान चलें

ले० श्री भद्रसेन 182-शालीमार नगर, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। जैसे कि ऋग्वेद का ऐतरेय और शांखायन (कौषीतकि)। यजुर्वेद के शुक्ल-कृष्ण भेद से शतपथ, तैत्तिरीय आदि। सामवेद के ताण्ड्य-षड्विंश मन्त्र ब्राह्मण-सामविधान आदि आठ हैं और अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण प्रसिद्ध है।

विषय विवेचन-ब्रह्म शब्द बड़े होने के अर्थ से जहां परमेश्वर, वेद का वाचक हैं, वहां यज्ञ का भी बोधकर है। ब्राह्मण ग्रन्थों में विशेष रूप से अपने-अपने वेद से सम्बद्ध श्रौतयज्ञों की प्रक्रिया का ही विशेषत: वर्णन है। यज्ञ के देवता द्रव्य, फल, विधि जहां ब्राह्मणों के वर्ण्य तत्त्व हैं, वहां यज्ञों में अपेक्षित मन्त्रों का प्रयोग भी एक आवश्यक अंग है। अर्थात् किसी द्रव्य, क्रिया के समय कौन-सा मन्त्र उच्चारित किया जाए, यह बताना ब्राह्मण ग्रन्थों का एक विशेष प्रयोजन है। इसी का नाम मन्त्र विनियोग है। इस विनियोग के स्वारस्य, जचाव को बताने के लिए कहीं-कहीं ब्राह्मणों में पूरे, आधे मन्त्र या उसके एक पाद या किसी विशेष शब्द का अर्थ भी बताया गया है। इस प्रकार विनियोग की सार्थकता के लिए ब्राह्मणों में क्वचित-क्वचित मन्त्रार्थ का विवेचन भी प्राप्त होता है। इस प्रकार याज्ञिक प्रक्रिया के प्रसंग में ब्राह्मण वेद का अर्थ भी दर्शाते हैं। हां, ब्राह्मणों का एक कर्त्तव्य गृहस्थों के यज्ञ कराना भी है और ऐसे यज्ञों का ब्राह्मण ग्रन्थों में विश्लेषण है।

आरण्यक-अरण्य=जंगल में किए जाने वाले वानप्रस्थों के यज्ञीय विधि-विधान के बोधक ग्रन्थ ही आरण्यक हैं। जैसे ब्राह्मण शब्द गृहस्थों के यज्ञ कराने वाले के लिए है, ऐसे ही वानप्रस्थ भी आरण्यक कहे जा सकते हैं। आरण्यक वानप्रस्थ के यज्ञों का जहां विवेचन करते हैं, वहां उन यज्ञीय विधियों के रहस्यों पर भी आरण्यक ग्रन्थ विचार करते हैं। अतएव अरण्य का एक अर्थ रहस्य भी है। ब्राह्मणों की तरह आरण्यक भी अपने-अपने वेद से जुड़े हैं। इस समय आठ आरण्यक प्राप्त हैं। ऋग्वेद के ऐतरेय और शांखायन आरण्यक हैं, तो यजुर्वेद के बृहदारण्यक (जोकि शतपथ का अन्तिम भाग है), तैत्तिरीय-मैत्रायणी आरण्यक उपलब्ध हैं। सामवेद के तवलकार आरण्यक (इसी का दूसरा नाम जैमिनीयोपनिषद ब्राह्मण भी है) और छान्दोग्यारण्यक। यजु:-साम के इन आरण्यकों से एक बात यह भी सामने आती है, कि कुछ आरण्यक और उपनिषद ब्राह्मण ग्रन्थों के ही भाग हैं और कुछ स्वतन्त्र सत्तायुक्त हैं।

उपनिषद्-उप+नि उपसर्ग पूर्वक षद् धातु से उपनिषद् शब्द बनता है, अत: इसका एक अर्थ पास में बैठना, गुरु के समीप बैठकर या विषय की गहराई में जाकर जो निश्चित ज्ञान, रहस्य प्राप्त किया जाए। तथा दु:ख कष्ट-बन्धन निवारक (आत्मा-परमात्मा विषयक ज्ञान) अध्यात्म ग्रन्थ भी उपनिषद् हैं। उपनिषदों को वेदान्त भी कहते हैं तथा वेदान्त दर्शन से पूर्व उपनिषदों का अध्ययन आवश्यक माना जाता है। तभी तो महर्षि दयानन्द ने लिखा है-'परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढ़ने के पूर्व ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पढ़ कर छ: शास्त्रों के भाष्य पढ़ लेवें। सत्यार्थ०, समु० 3, पृष्ट 64-65। क्योंकि वेदान्त में उपनिषदों के वाक्यों में दृश्यमान पारस्परिक विरोध का परिहार करके उनकी एक वाक्यता दर्शाई गई है। इसीलिए वेदान्त का एक नाम उत्तरमीमांसा भी है।'

वेदान्त-वेद+अन्त=वेद का सिद्धान्त-प्रतिपाद्य, ब्रह्म ही उपनिषदों का मुख्य विषय है। तभी तो कहा है-सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति-ओमित्येतत् कठ 2, 15। उपनिषद् ईशावास्य है, जो थोड़े से अन्तर के साथ यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय ही है। अठारह तक प्राचीन हैं, तो शेष उनके अनुकरण पर बनती चली गई हैं। वैसे इस समय 250 के लगभग उपनिषदें हैं।

वेदाङ्ग-वैदिक वाङ्मय में उपनिषदों के बाद वेदांगों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैसे शरीर के अंग उसके कार्य में सहायक होते हैं, ऐसे ही वेद के स्वरूप (शरीर) को समझने-समझाने में सहायक ग्रन्थ वेदांग कहलाते हैं। वेदांग से शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द:, ज्योतिष इन छ: का ग्रहण होता है।

शिक्षा-मुख आदि से बोले जाने वाले अक्षरों, वर्णों के उच्चारण सम्बन्धी विषय का विवेचन करने वाले ग्रन्थ। इनमें पाणिनीय आदि शिक्षा और ऋग्-यजु: आदि प्रातिशाख्यों का ग्रहण होता है। इस प्रकार शिक्षा में वर्णों का स्वरूप, उच्चारण स्थान-यत्न और बोलने वालों के गुण-दोषों का विचार मिलता है।

कल्प-कल्प शब्द से यज्ञ साहित्य का ग्रहण होता है। इसमें चार प्रकार के यज्ञीय ग्रन्थ आते हैं। जैसे कि श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र शुल्वसूत्र। श्रौतसूत्रों में श्रुति=वेद में आए दार्श, पौर्णमास आदि बृहत यज्ञों की प्रक्रिया का विवेचन है। गृह्यसूत्रों में गृह्यस्थ में होने वाले संस्कारों, पंचमहायज्ञ आदि का वर्णन है। धर्मसूत्रों में यज्ञ करने-कराने वालों के धर्म-नियम, कर्त्तव्य बताए गए हैं और शुल्व कहते हैं धागे को, अत: धागे से माप कर बनने वाले यज्ञकुण्डों, वेदियों, यज्ञशालाओं का शुल्वसूत्रों में विवेचन है। ये वास्तुशिल्प और रेखागणित के प्राचीन ग्रन्थ हैं।

व्याकरण-भाषा सम्बन्धी लक्षण शास्त्र का वाचक ही व्याकरण शब्द है। हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों, वाक्यों और उनके अर्थों का इसमें विचार मिलता है। ऐसे ही वेद विषयक भाषाशास्त्री को ही वैदिक-व्याकरण कहा जा सकता है।

निरुक्त-निरुक्त शब्द का अर्थ है-निश्चित कहना। इसमें वेद के शब्दों के अर्थों को समझने-समझाने की प्रक्रिया जहां है, वहां किसी के पर्यायवाचकों, एक शब्द के अनेक अर्थों और देवतावाचक शब्दों के अर्थों का उदाहरण सहित विचार है।

छन्द:-वेदमन्त्रों में गायत्री, अनुष्टुप आदि छन्दों का प्रयोग है। उन छन्दों की व्यवस्था को इसमें बताया गया है।

ज्योतिष-ज्योति: से ज्योतिष शब्द बनता है। सूर्य-चन्द्र के लिए यहां ज्योति शब्द है। अत: इन ज्योतियों के आधार पर चलने वाली दिन-मास-वर्ष आदि की काल गणना इसका विषय है, क्योंकि अनेक यज्ञ विशेष काल में होते हैं, जिसका बोध ज्योतिष से ही होता है। इसको स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है-'ज्योतिषशास्त्र सूर्यसिद्धान्तादि जिसमें बीजगणित, अङ्क, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है। सत्यार्थ० समु० 3, पृ० 66।' (क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

हम कैसा ईश्वर चाहते हैं

-ले० श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22 नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर

लेख का शीर्षक अधिकाँश पाठकों को बेतुका लगेगा। है भी। ईश्वर क्या by choice होता है, इच्छा से मिलता है ? वास्तविकता तो यही है कि ईश्वर जैसा भी है, उसके स्वरूप को हमें पहचानना होगा, समझना होगा। वैदिकयुगीन ऋषि-महर्षियों का चिंतन इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित था।

वैदिककालीन ऋषियों ने ईश्वर का स्वरूप कैसा निर्धारण किया, उसे महर्षि दयानंद के शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :-

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

भू-मण्डल में ऐसे ईश्वर की स्वीकार्यता, मान्यता 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53114 वर्ष रही। इसमें छ: हजार वर्ष कम किये जा सकते हैं, क्योंकि विद्वान मानते हैं कि महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व वैदिक सभ्यता का पतन प्रारम्भ हो गया था।

वास्तविकता के धरातल पर हम विचार करें तो उपरोक्त गुणों से सम्प्रोक्त ईश्वर की स्वीकार्यता हमें दिखाई नहीं पड़ती। आज हम ईश्वर का स्वरूप अपनी इच्छा के अनुसार निर्धारित करना चाहते हैं या यों कहें कि हम अपनी इच्छा का ईश्वर चाहते हैं।

हम माँग, मनोकामना, मन्नत पूरी करने वाला ईश्वर चाहते हैं। माँग, मन्नत यदि कब्र में लेटा हुआ मुर्दा भी पूरी कर सकता है, तो वह भी चलेगा। हमें मालूम ही नहीं है कि वेदोक्त ईश्वर ने सृष्टि रचना के साथ जीवात्मा की समस्त न्यायोचित माँगों को-लोक कल्याण को, जीव के चहुँमुखी कल्याण को, आजीवन पूरी करने का ठेका ले लिया था। उन्हें पूरी करने का रास्ता भी बता दिया। हम उस रास्ते पर चलना नहीं चाहते। चाहें वेद कहें या गीता-अन्यथा ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का यह स्वरूप नहीं होता जो आज उपासना गृहों में सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। लोग शुद्ध मन से ईश्वर की, केवल ईश्वर की उपासना के लिये इन उपासना गृहों में नहीं जाते। श्रद्धासुमन के साथ रिश्वत का प्रस्ताव भी अपनी आर्थिक सम्पन्नता के अनुरूप करते हैं। प्रसाद से लेकर स्वर्ण मुकुट भेंट करने तक। मन्नत पूरी न करने पर धौंस देते हैं-तेरी चौखट पर नहीं आयेंगे। यह प्यार भरा उलाहना नहीं होता है। दु:ख, निराशा व आक्रोश भरे उद्‌गार होते हैं।

इस एक बिन्दु के अतिरिक्त अन्य दो बिन्दुओं पर विचार करना मेरे आशय की पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है।

दूसरा बिन्दु है-पापाचरण से मुक्ति। महर्षि दयानंद ने ईश्वर को न्यायकारी निरूपित किया है। न्यायकारी शब्द के अंतर्गत कर्मफल प्रदाता का गुण अर्न्तभूत (inherent) है। यह हम नहीं चाहते।

पौराणिक बन्धुओं के लिये तो पाप-ताप निवारण के लिये ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं है। गंगा मैया ही काफी हैं। प्रत्येक कुम्भ पर करोड़ों हिन्दू भक्तों के पाप गंगा मैया बिना डिटरजेन्ट लगाए (बिना कर्मफल दिये) धो डालती हैं। यदि इस प्रक्रिया को पूर्णतया सत्य भी मान लें तो गंगा मैया उन भक्तों से क्यों नहीं कहती कि इस बार तुम्हें पाप मुक्त करती हूँ, अगली बार नहीं करूँगी। लेकिन गंगा तो मुक्तिदायिनी जलप्रवाह है। पाप करके आइए, वह पाप धो देगी। आपका काम है पाप करना और गंगा का काम है, पाप धोना। यह कार्य निरन्तर उस समय से चल रहा है जबसे गंगा को पाप धोने का ठेका धर्म धुरीणों ने अयाचित ही दे दिया था। वेदोक्त ईश्वर कहता है कि पाप कर्म से बिना यथोचित दण्ड पाये निवृत्ति नहीं, छुटकारा नहीं। गंभीर दुराचरण की कड़ी से कड़ी दण्ड व्यवस्था। प्रत्येक पापकर्म की दण्ड व्यवस्था। गंगा पूछती नहीं कि कौन सा पाप किया है। एक डुबकी लगाई और एक नहीं, सब पाप धुल गए।

पाप निवृत्ति का यह प्रसंग ईश्वर की न्याय व्यवस्था से जुड़ा है। महर्षि ने संदर्भित वर्णन में ईश्वर का न्यायकारी होना भी बताया है। ईश्वर का वेदोक्त न्यायकारी स्वरूप विश्व भर के 99.99 प्रति जनसमुदाय को स्वीकार्य नहीं है। प्रतिशत बढ़ाकर शत प्रतिशत कर सकता हूँ पर अज्ञात् ईश्वर भक्तों के लिए कुछ गुंजाइश तो इस अल्पज्ञ को छोड़नी ही पड़ेगी।

ईश्वर को न्यायकारी तो सब चाहते हैं। पर ऐसा न्यायाधीश जो उनके ही पक्ष में निर्णय दे। चाहे वे गलत हों या सही हों। हम ईश्वर को भी उसी रूप में देखना चाहते हैं जिस रूप में मानवीय न्यायालयों में दिखाई पड़ता है। मानवीय न्यायालयों में निर्णय गवाह, सबूत के आधार पर होता है। गवाह, सबूत ऐसे होने चाहिये जिनसे न्यायाधीश पूर्णतया संतुष्ट हो अन्यथा शक की स्थिति में लाभ-आरोपी को मिलता है। हमारे यहाँ तो ब्रिटिश न्याय व्यवस्था की परम्परा अक्षरश: निभाई जा रही है। सौ अपराधी छूट जावें, लेकिन एक निरापराधी को सजा नहीं मिले। ऐसी मानसिकता से अपराधियों को सजा मिलने की संभावना कम होती है। न्याय व्यवस्था की कई सीढ़ियां हैं। ट्रायल कोर्ट से लेकर उच्चत्तम न्यायालय तक। फिर जघन्य अपराधों में मृत्युदण्ड पाये अपराधियों की दया याचना के लिये राष्ट्रपति महोदय का द्वार खुला है। यह स्थिति है, मानवीय अदालतों की।

वैदिक ईश्वर की न्याय व्यवस्था में एक मात्र न्यायाधीश वही है। न उसके नीचे कोई अदालत है और न कोई ऊपर। उसे गवाह, सबूत, सिफारिश किसी की जरूरत नहीं क्योंकि वह सर्वान्तर्यामी है। पक्ष और विपक्ष दोनों ही पक्षकारों के कर्मों की उसे पूरी-पूरी जानकारी है। वह न्याय करता है ; फैसला नहीं। फैसले मानवीय अदालतें करती हैं।

वेदोक्त ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी होने में यानि जहाँ प्रकरण घटित हुआ, वहाँ भी वह मौजूद था। जिन व्यक्तियों के बीच घटा उनकी आत्मा के साथ में विराजमान था। इसलिये वह यथातथ्य न्याय करता है। उसे डराया; फुसलाया नहीं जा सकता। उसके निर्णय की अपील नहीं क्योंकि उसके ऊपर, नीचे कोई नहीं। दण्ड कम-ज्यादा होने की गुंजाइश नहीं। व्यक्ति जानता है उसने पाप किया है, अपराध किया है।

इस्लाम व ईसाईयत के पापाचरण से मुक्ति, छुटकारे के दावे यदि सामान्य बौद्धिक स्तर पर स्वीकार्य होते तो संपूर्ण विश्व बिना खून-खराबे के स्वत: प्रसन्नतापूर्वक ये धर्म अपना लेता और पूरी शांति से रहता। लेकिन ऐसा है नहीं।

इस्लाम में अल्लाहताला का न्याय रसूल की सिफारिश पर निर्भर करता है। और केवल इस्लाम के अनुयायियों पर ही लागू होता है। वेदोक्त ईश्वर की तरह, विश्व के समस्त मानव समुदाय पर नहीं। इस्लाम में अनुयायियों के गुनाह सुनाने/बताने के लिये रसूल की आवश्यकता है और इस जीवन-काल में पौराणिक भाईयों की तरह पापनिवृत्ति की कोई व्यवस्था नहीं है। दूसरे अल्लाहताला की अदालत का फैसला केवल एक दिन ही होगा। तब तक कब्र में ही रहना होगा।

ईसाईयत में यह कार्य ईसामसीह करते हैं। उन तक सिफारिश पहुँचाने का काम पादरी लोग पाप की स्वीकृति (कानफैशन) कराकर करते हैं। इस तरह ईसाईयत में पापमुक्ति की दो टियरवाली व्यवस्था है। पाप कर्मों की मुक्ति की गारण्टी दोनों धर्मों (मतों) में है।

अब आप ही बताईये, हमें किस धर्म को मानने में लाभ है। एक वह जो पाप कर्मों से मुक्ति की गारण्टी, शत-प्रतिशत गारण्टी दे या वह जो न्यायानुसार दण्ड विधान की व्यवस्था करे। बड़ा कठिन है वेदोक्त न्यायकारी ईश्वर को मानना।

वेदोक्त संस्कृति, उसकी ईश्वर की अवधारणा, सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही एक अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 114, (-) 6 हजार, वर्ष तक इस भूमण्डल पर रही। इस विरासत का अंतिम उत्तराधिकारी महर्षि जैमिनी को माना जाता है। छ: हजार वर्ष के अंतराल के पश्चात् गुरू विरजानंद जी महाराज ने इस विरासत को सम्भालने का दायित्व शिष्य दयानंद को सौंपा। जिस पथ पर महर्षि दयानंद को चलना पड़ा था वह पथ आज भी उतना ही कंट काकीर्ण है और उस पथ पर चलने वाले का हश्र भी उतना ही सुनिश्चित है जो महर्षि दयानंद का हुआ।

सम्पादकीय.....

धर्म की आवश्यकता

सुख की कामना मनुष्य की स्वाभाविक कामना है परन्तु किसी वस्तु की कामना करने से ही तो वह सिद्ध नहीं हो जाती। जैसे प्रत्येक वस्तु की कुछ कीमत होती है और उस कीमत को चुकाए बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती। सुख की भी कीमत है और वह है सुख के लिए ज्ञानपूर्वक यथोचित पुरुषार्थ अथवा धर्म। आज जबकि प्रायः राजनीतिज्ञ धर्म का नाम सुनते ही चौंक उठते हैं, महाभारत के पश्चात हमारा सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ चाणक्य कहता है कि सुखस्य मूलं धर्मः अर्थात् सुख का मूल धर्म है। अतः बिना धर्म के सुख की प्राप्ति नहीं होती। प्रायः लोग प्रचलित रीति रिवाजों और बाह्य चिन्हों को ही धर्म समझ लेते हैं और मत पन्थ और सम्प्रदाय या मजहब और धर्म में कोई अन्तर नहीं समझते। मत, पन्थ और सम्प्रदाय किसी मनुष्य विशेष के चलाए हुए हैं। किसी महापुरुष ने किसी विशेष परिस्थिति में किसी देश में जनता के कल्याण का कोई मार्ग बताया जिसकी उस समय उन्हें आवश्यकता थी वह मजहब है, जो बाद में परिस्थितियों का ध्यान न रखते हुए, सोच विचार और विवेक के अभाव में अन्धपरम्परा और रूढिवाद का रूप धारण कर लेता है और फिर उसकी वह उपयोगिता नहीं रहती। जिस प्रकार जाड़े के दिनों में गर्म ऊनी कपड़ों की जो उपयोगिता है वह गर्मी के दिनों में नहीं रहती। अतः मजहब देश, काल और सीमा के अन्दर बन्द हैं। परन्तु धर्म उन अटल शाश्वत नियमों का नाम है जिन पर संसार स्थित है और जो सृष्टि को धारण कर रहा है। जिसके कारण वस्तु का अस्तित्व बना हुआ है वह उसका धर्म है। जैसे अग्नि के दो गुण हैं, प्रकाश और उष्णता। जब तक अग्नि में ये दो गुण रहते हैं तब तक अग्नि अग्नि है वर्ना राख है। इसी प्रकार जिन गुणों के कारण मानव मानव समझा जाता है और जिनके न होने से इन्सान-इन्सान नहीं रहता, वह धर्म है। इसीलिए परमात्मा ने वेद में आज्ञा दी कि मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनो। आज जबकि चारों ओर मत,पन्थ और सम्प्रदायवाद का जाल फैला हुआ है। आज हर कोई अपने- अपने पन्थ और सम्प्रदाय का विस्तार करना चाहता है, कोई ईसाई बनने के लिए कहता है, कोई मुसलमान बनने के लिए कहता है, कोई बौद्ध, कोई जैन। परन्तु कोई भी सम्प्रदाय मनुष्य बनने के लिए नहीं कहता इसलिए वेद ने कहा कि मनुष्य बनों। मनुष्य बनने पर वह किसी भी पन्थ,मजहब और सम्प्रदाय से घृणा नहीं करेगा, वह किसी से छल कपट नहीं करेगा। इसीलिए मनुष्य की परिभाषा की गई कि मत्वा कर्माणि सीव्यति अर्थात् जो सोच विचार कर कर्म करता है वह मनुष्य कहलाता है। वेद के अनुसार अगर हम मनुष्य बन जाते हैं तो हम आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात् अपने समान सभी प्राणियों को देखते हैं। हमारे अन्दर भेदभाव की कोई भावना नहीं रहती,यही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

धृति अर्थात् धैर्य और सहनशीलता, क्षमा, जितेन्द्रियता, सदाचार और पवित्रता, दया और परोपकार आदि शुभ गुण और ज्ञानपूर्वक कर्त्तव्य कर्म मानव का धर्म है। जिस प्रकार प्राकृतिक नियम अटल हैं आचार सम्बन्धी नियम भी अटल हैं। जैसे आम के बीज से सदा आम और बबूल के बीज से बबूल ही पैदा होता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा ही होता है। यह सुख और दुःख मनुष्य के अपने ही अच्छे या बुरे कर्मों का फल है। दूसरों के साथ व्यवहार के समय सदा इस बात को ध्यान में रखा जाए कि हम उनसे ऐसा ही बर्ताव करें जिसकी अपने लिए कामना करते हैं। धर्म के नियम सार्वभौम हैं। धर्म न हिन्दू है न मुसलमान, न सिख है न ईसाई बल्कि धर्म धर्म है। मत-मतान्तरों और मजहबों में तो किसी व्यक्ति विशेष को प्रधानता दी जाती है, परन्तु धर्म में ज्ञानपूर्वक कर्म को प्रधानता दी गई है। जैसे कि प्राचीन ऋषियों और आचार्यों ने कहा कि न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम् अर्थात् सत्य से बढकर कोई धर्म नहीं और असत्य से बढकर कोई पाप नहीं, धर्म का आधार ही सत्य है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी रखा कि- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। बिना विचार या विवेक के ही संसार में अन्धविश्वास, अन्धपरम्पराओं और रूढिवाद को पनपने का अवसर मिलता है। इसलिए मनुष्य को अपने सभी कर्मों में आर्य समाज के नियम को ध्यान में रखना चाहिए। आर्य समाज किसी अन्धविश्वास, रूढिवाद और व्यक्तिवाद पर आधारित नहीं है। इसलिए आर्य समाज के नियम सार्वभौम हैं क्योंकि धर्म का आधार ऋत है और ऋत का आधार सत्य है। नैतिकता सत्य के बिना टिक नहीं सकती। पहले प्रभु को साक्षी जानकर सत्य बोलना, और सत्यव्यवहार करने का स्वभाव बनाना चाहिए। सदाचारी मनुष्य का ध्येय सत्य और न्याय से ही ऐश्वर्यवान होकर श्रेयमार्ग पर गमन करना है। धर्मशील मनुष्य का हृदय शुद्ध होता है। धर्मपथ पर चलता हुआ मनुष्य अपने मार्ग पर चलता हुआ अपने साध्य को साधन द्वारा प्राप्त करता है।

ईश्वर ने सृष्टि की रचना बहुत ज्ञानपूर्वक की है। मनुष्य को देखने के लिए आँख दी परन्तु बिना प्रकाश के आँखें देख नहीं सकती अतः आंख की सहायता के लिए सूर्य का प्रकाश दिया। सत्य असत्य को समझने के लिए सबसे उत्तम वस्तु बुद्धि दी और उसकी सहायता और मार्गदर्शन के लिए सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही वेद का ज्ञान दे दिया। वेद का ज्ञान किसी देश विशेष या जाति विशेष के लिए नहीं अपितु मनुष्य विशेष के लिए दिया है। अतः वेद के प्रकाश में बुद्धि द्वारा अपने कर्त्तव्य को समझकर अपने कर्त्तव्यों को करना अर्थात् धर्माचरण ही व्यक्ति और समाज के सुख का साधन है।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

वर्ष 2014 के नये कैलेंडर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेन्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर देती है। इसी प्रकार सन् 2014 के महर्षि दयानन्द के चित्र वाले कैलेन्डर भी आधे मूल्य पर दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेन्डर का मूल्य चार रूपये प्रति तथा 400 रू. सैकड़ा रखा गया है। इसलिए सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेन्डर सभा कार्यालय से मंगवाकर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय 10 से 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिए समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेन्डर मंगवाएं।

–प्रेम भारद्वाज, सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

योगसाधन

-ले० श्री डॉ० रविदत्त शर्मा, साहित्याचार्य आर्य समाज-शामली

यदग्ने स्यामहं त्वं-त्वं वा पा स्यामहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः॥ ऋ० ८.४४.२३

'हे प्रकाशस्वरूप, सर्वज्ञ परमेश्वर ! यदि मैं तुम हो जाऊँ और तुम मैं हो जाओ तो इस संसार में तुम्हारा आशीर्वाद सत्य हो जाये।'

मन्त्र में भक्त प्रभु से मिलने की प्रार्थना करते है, वह परमात्मा जैसा हो जाना चाहता है। जीवन और परमेश्वर का निकटतम सम्बन्ध ही योग कहा जाता है। जीवन की सार्थकता यही है कि परमेश्वर का साक्षात्कार करें। भौतिक पदार्थ भी एकत्र हो जाते हैं परन्तु वह मेल होता है। स्तुति-प्रार्थना-उपासना का यही उद्देश्य है। उपासना तक पहुँचते-पहुँचते जीव अपने को भूल जाता है और प्रभु के गुणों को धारण करता है। आत्मा और परमात्मा को मिलाने का उपाय योगसाधन है। महर्षि पतञ्जलि का अमर ग्रन्थ योगदर्शन, जो षड्दर्शनों में से एक है, सदैव मानव जाति का मार्गदर्शन करता रहेगा। यदि हम इस ग्रन्थ का परिशीलन करें तो आभास होगा कि वे जन अभागे हैं और ऋषि ऋण को धारण किये हुए हैं जिन्होंने पातञ्जलयोगदर्शन का अवलोकन नहीं किया। हम असंख्य पुस्तकें अनायास ही पढ़ डालते हैं परन्तु आत्मकल्याण सम्बन्धी सिद्धान्तों से सम्पन्न, ऋषियों के ग्रन्थों को कदाचित् ही देख पाते हैं। योगदर्शन जीवन की प्रयोगशाला है। हम जीवनभर समस्याओं से जूझते रहते हैं परन्तु उनका हल खोजने को अग्रसर नहीं हो पाते। यदि हमें थोड़ा भी विश्वास है तो ऋषिकृत ग्रन्थों के अध्ययन से हमारे जीवन की रूपरेखा ही बदल जायेगी। वेद में मानवीय उद्भावना की झलक मिलती है और उसका स्पष्टीकरण तथा सत्यापन अवान्तर ऋषियों ने किया है।

योग का उद्देश्य 'हेयं दुःखमनागतम्' सूत्र से स्पष्ट हो जाता है। जो दुःख अनागत है, अभी आया नहीं है, सम्भव है कि किसी भी समय आकर दबोच ले; वह हेय है, उसे योग की क्रियाओं के द्वारा दूर किया जा सकता है। अपने दैनिक कृत्यों में यदि हम योग की क्रियाओं को सम्मिलित कर लेते हैं तो दुःखों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। दुःखों का मूल पाँच क्लेशों को बताया गया है। अविद्या-अस्मिता-राग-द्वेष-अभिनिवेश ये पाँच क्लेश हैं। इनसे कर्मों के संस्कार बनते हैं। क्लेशों के समाप्त होने पर ये संस्कार स्वतः समाप्त हो जाते हैं। क्लेशरूपी मूल के कारण कर्मों का प्रभावरूपी संस्कार कर्म का फल भोगने को बाध्य करता है। बार-बार जन्म लेना, आयुभर भोगों को भोगना अर्थात् जाति, आयु और भोग यह ही कर्मों का परिणाम है। उसको अर्थात् कर्म को नियन्त्रित करने से ही दुःखों से छुटकारा मिल सकता है। व्यावहारिक जीवन में भूल यह होती है कि हम नश्वर को अमर, दुःख को सुख, अनित्य को नित्य, शरीर को आत्मा तथा अपवित्र को पवित्र मान बैठते हैं। यह विपरीत ज्ञान ही बन्धन का कारण बनता है। वास्तविकता को जानने के लिये एक उपाय है-

योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षेय ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः॥
योग० साधनपादसूत्र २८

योग के आठ अङ्गों के अनुष्ठान से अशुद्धि का क्षय (विनाश) हो जाता है, ज्ञान की दीप्ति (प्रकाश) बढ़ती जाती है। क्लेशों की निवृत्ति होकर पूर्ण विवेक हो जाता है। चित्त वृत्तियों को नियन्त्रित करने का भी यह उद्देश्य है जिससे कि हम निर्विघ्न आत्मकल्याण की ओर अग्रसर हो सकें। यदि हम चिन्तन करें या ध्यान में बैठें और मन पर बाह्य प्रभाव पड़ रहा हो तो मन पूरी तरह किसी कार्य में न लगेगा। विवेक होने पर भोगों की भीषणता का पता चलता है जिसे भर्तृ हरि ने स्पष्ट किया है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तारतपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

भोग नहीं भोगे गये हम ही भोगे गये, तप नहीं तपा गया हम ही तपे गये, समय नहीं बीता हम ही बीत गये तथा तृष्णा जीर्ण नहीं हुई अपितु हम ही जीर्ण हो गये। भोगों में लिप्त होने पर वस्तुस्थिति यही होती है किन्तु हम ठीक से जान नहीं पाते। विचित्रता यह है कि हम जितना अधिक भोगों को भोगते हैं उतनी ही कामना बढ़ती जाती है। भोगों से कामना शान्त नहीं होती जैसे अग्नि में घी आदि हवि डालने से वह प्रचण्ड हो जाती है वैसे ही इच्छा तीव्र होती जाती है-

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥

अति कहीं भी लाभप्रद नहीं है। यदि वास्तविक सुख भोगना है तो भोगों से विरत होना ही पड़ेगा। इस विषय में मध्यम मार्ग का अबलम्बन श्रेयस्कर होगा जिसे योगदर्शन में क्रियायोग कहा गया है। तप-स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधान क्रियायोग है-

तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः॥ साधन०-१

अपने कार्यों को सम्पन्न करते समय उनको सकुशल सिद्ध कर लेना, समस्त बाधाओं को दूर करना, कठिनाईयों को सहन करना, कभी भी स्खलित न होना तप है। जैसे कुशल सारथि चञ्चल घोड़ों को ठीक कर लेता है और फिर रथ में निश्चिन्त होकर यात्रा करता है। कष्टों को सहन करके भी कार्यसिद्धि में तत्पर रहना तप है। शरीर प्राण, इन्द्रियाँ और मन को उचित रीति तथा अभ्यास से वेश में करने को तप कहते हैं ; जिससे शीत-ग्रीष्म, भूख-प्यास, सुख-दुःख हर्ष-शोक, मान-अपमान, लाभ-हानि, जय-पराजय आदि द्वन्द्वों को सहन करके निर्विकार होकर अपनी कार्यसिद्धि में प्रवृत्त होते हैं। इस सम्बन्ध में गीता में बताया गया है कि जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कर्मों में, सोने-जागने में नियमित रहता है, उसका योग दुःखनाशक होता है। नियमित आहार-विहार अर्थात् मिताहार उसे कहते हैं कि स्निग्ध-मीठा-प्रिय आहार भूख के परिमाण से चौथायी भाग कम करके खाना इन्द्रियों को नहीं अपितु ईश्वर की प्रीति के लिये किया जाता है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ गीता ६-१७
सुस्निग्ध मधुराहारश्चतुर्थांश विवर्जितः।
भुज्यते प्रभुसम्प्रीत्यै मिताहारः स उच्यते॥

यदि हमें चार रोटियों की भूख है तो तीन रोटियाँ खा कर प्रसन्न रहना मिताहार है। नित्य सत्कर्म करते रहना, अत्यधिक परिश्रम न करना और आलसी या निकम्मा भी न होना युक्त कर्मचेष्टा कहलाती है। रात्रि में उचित निद्रा लेना, न अधिक सोना न जागरण करना युक्त स्वप्नावबोध कहलाता है। वाणी को संयम में रखना, अनावश्यक न बोलना वाणी का तप है। मन को काबू में रखना, वासनाओं में न बहने देना तथा कुमार्ग में न प्रवृत्त होने देना मन का तप है। आर्षग्रन्थों का परिशीलन, आत्मचिन्तन आदि स्वाध्याय के अन्तर्गत आते हैं। अपने को ईश्वराधीन कर देना ही प्रणिधान है। आत्मा का अधिष्ठान परमात्मा है, अतः उसका सदैव स्मरण करना चाहिये। ऐसा प्रत्येक कार्य जो हमारे आत्मा से जुड़ जाता है, हमारे लिये मार्ग प्रशस्त करना है, फिर हम सदैव अच्छे कर्म ही करते हैं। योग की प्रक्रिया को पुष्ट करने हेतु श्रुति भी हमें प्रेरणा करती है-

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्।
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोऽधिशीर्षतः॥
तद् वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुब्जितः।
तत् प्राणो अभिरक्षति शिरो अन्नमथो मनः॥
अथर्व० १०,२.२६, २७

'मस्तिष्क से ऊपर रहने वाला पवित्र एवं अचल योगी अपने हृदय और मस्तिष्क को जोड़कर सिर से ऊपर प्रेरित करता है। निश्चल योगी का वह सिर, शीर्षस्थानीय अभ्यास, इकट्ठा किया हुआ देव कोश है। उस सिर की प्राण सब तरह रक्षा करता है; भोजन और मन भी रक्षा करता है।' उक्त मन्त्रों में देव कोश संग्रह की प्रेरणा की गयी है। एक साधक की यही स्थिति होती है, उसका मन बुद्धि के साथ मिला हुआ होता है। प्राणायाम की शक्ति से वह सामान्य स्थिति से ऊपर उठ जाता है। इसी स्थिति को योगदर्शन में 'तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्' व 'ऋतम्भरा तथा प्रज्ञा' इन दो सूत्रों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। बुद्धि की ऋतम्भरा संज्ञा हो जाती है। इस ऋतम्भरा बुद्धि के द्वारा साधक अथर्वा हो जाता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

www.thearyasamaj.org

हम सूक्ष्म बुद्धि से प्रभु दर्शन करें

-ले० श्री -डा. अशोक आर्य 104 शिप्रा अपार्टमैन्ट, कौशाम्बी गाजियाबाद

प्रभु दर्शन के लिए बुद्धि का सूक्ष्म होना आवश्यक है, जो शरीर में सोम की रक्षा करने से बनती है। यह ही प्रभु की सच्ची प्रार्थना है। वह प्रभु ही वरणीय वस्तुओं के ईशान है तथा हमारे वह प्रभु ही पालन करने वालों में सब में उत्तम पालक हैं। इस बात का ही वर्णन यह मन्त्र इस प्रकार कर रहा है :-

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम।
इन्द्रं सोमे सचा सुते॥

ऋग्वेद १.५.२॥

इस मन्त्र में चार बातों पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

१. जब हम प्रभु को मित्र मानकर सब मित्रवत एकत्र होकर प्रभु के समीप जाते हैं, उसका गायन करते हैं, उस की उपासना करते हुए हम उपासक कहते हैं कि वह प्रभु पालकों में सब में अधिक श्रेष्ट पालक है। हम जानते हैं कि माता पिता अपने बच्चे का पालन करते हैं, इस कारण वह पालक कहलाते हैं। व्यवसाय में कार्यरत कर्मचारियों का पालक होता है उस व्यवसाय का मालिक, इसलिए उस के कर्मचारी तथा उसका परिवार उसे पालक मानते हैं। इस प्रकार ही हमारा वह परमात्मा भी हमारा पालक होता है क्योंकि उसने न केवल हमें इस संसार में पैदा ही किया है बल्कि हमें अनेक प्रकार के सुगन्धित फूल, खाने के लिए भरपूर फल, सब्जियां व वनस्पतियां दी हैं तो पहनने के लिए उत्तम वस्त्र भी दिए हैं। इस प्रकार वह परमात्मा भी हमारा बड़े उत्तम प्रकार से पालन कर रहा है। वह भी हमारा पालक है। वह प्रभु ही हमारे सब प्रकार के शल्यों, दोषों को, शत्रुओं को यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि सहस्त्रों शत्रुओं को क्षीण करता है, उनका नाश करता है, उनके भय से हमें बचाता है। इसलिए हम उस प्रभु का गायन करते हैं। उसकी कीर्ति का, उसकी विशेषताओं का, उसके उपहारों का स्मरण हुए उस के यश का हम गायन करते हैं, स्मरण करते हैं।

२. हमारे सब शत्रुओं का प्रभु नाश कर देते हैं। जब प्रभु की कृपा से हमारे सब शत्रु कमजोर हो जाते हैं, उनकी शक्ति क्षीण हो जाती है। सोम द्वारा उत्पन्न की गई शक्ति से वह मारे जाते हैं तो प्रभु से प्राप्त इस शक्ति से हम पुरुषार्थ करते हैं, मेहनत करते हैं, प्रयास करते हैं तथा हम अनेक प्रकार के धनों को पाने में हम सफल हो जाते हैं। इस प्रकार वह प्रभु न केवल हमारे शत्रुओं की शक्ति को ही नष्ट करता है बल्कि हमें अनेक प्रकार के धनों का स्वामी बना कर हमें धनवान भी बनाता है। इसलिए हम उस प्रभु की स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हैं, उपासना करते हैं। हम उस प्रभु के गुणों का गायन, उस प्रभु के निकट अपना आसन लगा कर उसके पास जाकर करते हैं।

३. वह प्रभु वरण करने के, धारण करने के योग्य है। वह प्रभु ही सब प्रकार के धनों का स्वामी है। जगत में वह प्रभु सर्वाधिक धनवान होगी। उसकी प्रतिस्पर्धा में कोई अन्य धनवान नहीं है। जिसके पास जो भी धन है, वह सब उस प्रभु का ही दिया हुआ है। ऐसे परम ऐश्वर्य वाले प्रभु से शत्रुओं का नाश करने वाले उस प्रभु का हम कीर्तन करते हैं, उसे स्मरन करते हुए उस के गुणों को हम अपने गीतों में संजोकर गाते हैं। ऐसे प्रभु के यश व कीर्ति हमारे भजनों का, हमारे गीतों का अंग होते हैं, केन्द्र होते हैं, जिन्हें हम गाते हुए अत्यन्त खुशी अनुभव करते हैं।

४. उस प्रभु का स्तवन, उस प्रभु के गुणों का गायन हम तब ही कर पाते हैं, जब हमने विपुल मात्र में सोम का पान किया होता है। यह सोम भी न केवल प्रभु से मेल होने पर ही होता है अपितु प्रभु पाने का साधन भी है। हम पहले भी बता चुके हैं कि सोम शक्ति का स्त्रोत होता है। जिसके शरीर में शक्ति होती है वह ही किसी काम में दिल लगा कर परिश्रम करता है। प्रभु स्तवन, प्रभु के गुणों का गायन भी वह ही कर सकता है, जिसने सोम को अपने शरीर में धारण किया है। अतः उस प्रभु से मेल के लिए शरीर का सशक्त होना आवश्यक है तथा शरीर को शक्तिशाली रखने के लिए शरीर में सोम की विपुलता का होना भी आवश्यक है।

इस प्रकार मन्त्र यह उपदेश कर रहा है कि हम सोम का अपने शरीर में सम्पादन करने वाले, निर्माण करने वाले बनें। सोम का निर्माण कर हम सोम की रक्षा के उपायों को भी जानें तथा इस बनाये गए, पैदा किए गए सोम को शरीर में सम्भालने का भी उपाय हम करें। जब यह सोम हमारे शरीर में सुरक्षित हो जाता है तब यह सोम ही हमारा उस पिता से मेल कराने वाला, उस पिता के पास ले जाने वाला बनता है। इस प्रकार अपने शरीर में सोम को पैदा करना, उसकी रक्षा करना जब हो जाता है तो हमारे शरीर में सोम के विपुल भण्डार हो जाते हैं तब यह सोम ही हमें प्रभु की ओर ले जाता है। यह सोम ही हमारा उस पिता से मेल कराता है। इस प्रकार जब हम सोम को पैदा कर उसे सम्भालते हैं तो यह ही वास्तव में सच्चे अर्थों में प्रभु का सच्चा स्तवन है, सच्ची प्रार्थना है, सच्चा कीर्तन है, सच्चा गायन है। हमारे शरीर के इस सोम से जब हम उस महान प्रभु रुपी सोम को प्राप्त करते हैं तो यह ही जीवन की सब से महान सफलता मानी जाती है, यह ही सब से बड़ी सफलता होती है।

पृष्ठ 4 का शेष-योगसाधन.....

तभी तो देव कोश का संग्रह हो पाता है और मानसिक तथा बौद्धिक विकारों से सर्वथा मुक्त हो जाता है। देवी सम्पत् प्राप्त होने पर आसुरी वृत्तियाँ स्वत: भाग जाती हैं। ऐसा नहीं कि साधक अन्य कार्यों को करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। अन्य साधारण भोगी जन उसकी शक्ति में आश्चर्य प्रकट करते हैं। श्रीकृष्ण में योग बल था और देव कोश संचित किया हुआ था। जो योग की शक्ति को नहीं समझ पाते ऐसे लोग उन्हें भगवान समझते हैं। यही शक्ति हनुमान में थी। अध्यवसाय के बल पर साधारण से साधारण व्यक्ति महापुरुष बन सकता है। विशेष कर छात्रों के लिये क्रियात्मक योग अत्यन्त उपयोगी है। चित्तवृत्तियों को वश में करके सारी शक्ति केन्द्रित हो जाती है। यही योग का क्रियात्मक रूप है। जिस शक्ति को हम व्यर्थ के कामों में बर्बाद कर देते हैं उसी शक्ति के द्वारा ईश्वर को भी जान सकते हैं-

येन रूपं रसं गन्धं शब्दान् स्पर्शांश्च मैथुनान्।
एतेनैव विजानाति किमत्र परिशिष्यते॥

परमात्मा के द्वारा दी गयी शक्ति को भोगों से बचा कर अविनाशी तत्त्व को भी जान सकते हैं। भोगों में शक्ति क्षीण हो जाती है और चिन्तन-मनन आदि से वह शक्ति बढ़ती है। अत: जीवन को योगमय बनाकर अमूल्य-अविनाशी निधि देव कोश का संग्रह करें।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज बंगा ज़िला शहीद भगत सिंह नगर (पंजाब) का 32वां वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज बंगा का 32वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 13-12-2013 से 15-12-2013 तक बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। यह उत्सव चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में मनाया गया। तीनों दिन प्रात: चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ आर्य समाज बंगा की यज्ञ वेदी पर बड़ी श्रद्धा और भाव भक्ति से चलता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य रामानन्द शिमला वाले थे और स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा वृन्दावन उनको सहयोग देते रहे। श्री पंडित रमेश स्नेही सहारनपुर अपने ढोलकिये श्री माणे राम के साथ अपने भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करते रहे। तीनों दिन प्रात: 8.30 बजे यज्ञ और यज्ञ के पश्चात भजन प्रभु भक्ति एवं आचार्य जी के प्रवचनों द्वारा जनता ने भरपूर लाभ उठाया। दिनांक 15-12-2013 दिन रविवार को ठीक 9.30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति द्वारा चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। आदरणीय आचार्य रामानन्द जी ने सभी यजमानों को शुभ आशीर्वाद दिया और सबको प्रतिदिन अपने घरों में यज्ञ करने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार दिनांक 13-12-2013 दिन शुक्रवार और दिनांक 14-12-2013 दिन शनिवार को दोनों दिन रात्रि 7 बजे से 9 बजे तक प्रचार कार्य चलता रहा। पहले आदरणीय पंडित रमेश स्नेह जी के भजनों के पश्चात् आचार्य जी का प्रवचन चलता रहा। प्रतिदिन रात्रि को प्रसाद मिष्ठान एवं ऋषि लंगर भी लगाया जाता रहा। जनता ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। मंच संचालन श्री शादी लाल महेन्द्रु, प्रधान आर्य समाज बंगा एवं श्री श्याम लाल आर्य पुरोहित आर्य समाज बंगा ने किया।

उत्सव के आखिरी दिन रविवार दिनांक 15-12-2013 को प्रात: अग्निहोत्र यज्ञ के पश्चात् ठीक 9.30 बजे आचार्य रामानन्द शिमला वालों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ओ३म् पताका आर्य समाज के प्रांगण में जयघोष करते हुए बड़ी शान से लहराने लगी। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती द्वारा ध्वज गीत गाया गया। प्रात: राश के पश्चात ठीक 10.30 बजे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आरम्भ हुआ। सबसे पहले अध्यक्ष महोदय चौधरी ऋषि पाल सिंह जी को सम्मानित करके सम्मेलन आरम्भ करने की अनुमति प्राप्त की गई। सम्मेलन में डा. वेद प्रकाश साधु आश्रम होशियारपुर, आचार्य रामानन्द जी शिमला वालों के राष्ट्र रक्षा पर प्रवचन हुए और स्नेही जी के भजनों द्वारा जनता ने बड़ा लाभ प्राप्त किया। इस सम्मेलन में माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा समलैंगिकता को अपराध घोषित करने पर प्रसन्नता प्रकट की गई और भारत सरकार द्वारा समलैंगिकता के हक में कानून बनाने की जानकारी पर सख़्त विरोध प्रकट किया। सारी जनता ने दोनों हाथ उठाकर सरकार से ऐसा कानून बिल्कुल पास न करने की मांग की गई और एक प्रस्ताव द्वारा इस कानून की विरोधता की गई। सरकार को चेतावनी दी गई कि भारत की जनता कभी ऐसे कानून को सहन नहीं करेगी और आर्य समाज इस के विरुद्ध एक बड़ा जबरदस्त आन्दोलन करेगा जिसकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर होगी। इस सम्मेलन में आर्य समाज बंगा के प्रांगण में चल रहे महर्षि स्वामी दयानन्द नि:शुल्क सिलाई केन्द्र की छात्राओं के परीक्षा पास करने पर प्रमाण पत्र एवं परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को प्रशस्ति चिन्ह देकर उत्साहित किया गया। सिलाई सीखने वाली नौ (9) ज़रूरतमंद छात्राओं को एक-एक सिलाई मशीन भी दान दी गई। सिलाई मशीन देने वाले दानी महानुभावों को सम्मानित किया गया। इस उत्सव में बंगा नगर निवासियों के अतिरिक्त फगवाड़ा, नवांशहर, बलाचौर, मुकन्दपुर, जींदोवाल खमाचों आदि अनेक गांवों के लोगों ने भाग लेकर सुशोभित किया। मीडिया वालों का भी पूरा-पूरा सहयोग रहा। इस उत्सव को सफल बनाने में श्याम लाल आर्य, नरेन्द्र गोगना, देवेन्द्र सूदन, राम भरोसे, विनोद शर्मा, देवराज, डा. वी. के अरोड़ा नवांशहर, विनोद शर्मा, अशोक महेन्द्रु, चान्द कुमार वरिष्ठ पत्रकार जालन्धर, अश्वनी डोगरा जालन्धर, राकेश सूरी, सतपाल सूरी, सुशील कुमार, राम मिलन, सतविंदर कुमार, मनजिंदर कुमार, विजय स्याल का विशेष योगदान रहा।

अन्त में अध्यक्षीय भाषण के पश्चात श्री शादी लाल महेन्द्रु प्रधान आर्य समाज बंगा ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। ऋषि लंगर लगाया गया जोकि सायं ६ बजे तक चलता रहा। उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

-नरेन्द्र गोगना मंत्री आर्य समाज

पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिल्का द्वारा अक्तूबर-2013 में आयोजित वैदिक ज्ञान परीक्षा का पारितोषिक वितरण एवं प्राचार्य सम्मान समारोह 28 नवम्बर 2013 को आर्य समाज मंदिर फाजिल्का में डॉ० आनन्द अभिलाषी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्यातिथि के रूप में श्री सन्दीप धूड़िया ज़िला शिक्षा अधिकारी फाजिलका तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोक जैरथ, श्री जगदीश सेतिया एवं श्री राकेश चूड़िया सम्मिलित हुए।

स्वागताध्यक्ष श्री सुशील वर्मा, डॉ० अमर लाल बाघला तथा अन्य गणमान्य महानुभावों ने अध्यक्ष, मुख्यातिथि तथा विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। इसके अतिरिक्त अन्य सभी आगन्तुक प्राचार्यों, शिक्षकों, छात्रों तथा सभी विद्यमान गणमान्यों का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मन्त्र पाठ से हुआ। डॉ० अमरलाल बाघला ने वैदिक शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

तत् परीक्षा संयोजक वेद प्रकाश शास्त्री ने बताया कि वैदिक ज्ञान परीक्षा में 19 स्कूल और 4 कॉलेजों के 1200 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए। यह परीक्षा प्राइमरी, मिडिल, मैट्रिक, सैकण्डरी एवं कालेज पांच ग्रुपों में आयोजित की गई।

इसमें विद्यालय स्तर पर क्रमश: गीतिका, बलदीप, कविता, अजय कुमार ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। द्वितीय स्थान प्राप्त काव्या, लवली, शबीना कम्बोज और रविन्द्र कुमार पुरस्कृत किए गए। तृतीय पुरस्कार रमणीक, लविश अरोड़ा, मानिक, आरती, कुलविंदर, हिमांशी तथा गगनदीप सिंह ने प्राप्त किया।

दो सौ से अधिक छात्राएं सम्मिलित होने के कारण विशेष श्रेणी के अन्तर्गत सरकारी कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल प्रत्येक ग्रुप की छात्राओं को पारितोषिक दिया गया। मिडिल ग्रुप में योगिता माथुर, अंजलि, संदीप कौर मैट्रिक में कर्मजीत कौर, सर्वजीत कौर, कोमल और सैकेण्डरी ग्रुप में पूनम रानी, अलका रानी, नीलम कुमारी ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। इसके लिए परीक्षा प्रभारी स्टेट अवार्ड प्राप्त श्री राजेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती रीटा सेठी एवं प्रिंसीपल श्री जगदीश मदान विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

कालेज ग्रुप में फाजिलका में ज्योति बी. एड. कालेज से सुशान्त धीर ने प्रथम, डी. ए. वी. कालेज आफ एजूकेशन की निशा तथा गौरव ने क्रमश: द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रत्येक स्कूल, कालेज के दो-दो छात्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

परीक्षा में सहयोगी पर्यवेक्षकों, परीक्षकों, सहयोगियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस बार सभी सहभागी स्कूल, कालेजों के प्राचार्यों को निरन्तर सहयोग के कारण विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

समारोह के अध्यक्ष डॉ० आनन्द अभिलाषी, मुख्यातिथि श्री संदीप धूड़िया ज़िला शिक्षा अधिकारी, विशिष्ट अतिथि श्री अशोक जैरथ, श्री जगदीश सेतिया, श्री राकेश धूड़िया ने अपने सन्देश में सभी छात्र/छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की।

अन्त में शास्त्री जी ने सभी छात्रों, शिक्षकों, सहभागी विद्यालयों, महाविद्यालयों के प्रमुखों के प्रति सहयोगार्थ अत्यन्त आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी एतादृश सहयोग की सदिच्छा व्यक्त की। भाजपा के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री जगदीश सेतिया की ओर से चायपान कराया गया। जिसके लिए शास्त्री जी ने उनका आभार व्यक्त किया। शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज नवांशहर ने मनाया 109वां वार्षिक उत्सव

नवांशहर आर्य समाज का दो दिवसीय 109वां वार्षिक समारोह धार्मिक श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया। स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस को समर्पित इस दो दिसवीय समारोह के दौरान जरूरतमंदों को कंबल वितरण किए गए तथा आर्य विद्वान आचार्य रामानंद जी शिमला वालों ने प्रवचन किए, जबकि भजन गायक अरूण जी ने अपने सुंदर भजनों से श्रोताओं को महर्षि दयानंद जी के संकल्प से जुड़ने का आह्वान किया। इस दो दिवसीय वार्षिक समारोह की शुरूआत शनिवार को सुबह आर्य समाज मंदिर में हवन यज्ञ के साथ हुई जिसमें अमित कुमार शास्त्री जी ने हवन यज्ञ करवाया। हवन यज्ञ में विनोद कुमार भारद्वाज एवं मीना भारद्वाज मुख्य यज्ञमान के रूप में शामिल हुए। हवन यज्ञ के उपरांत आर्य समाज नवांशहर द्वारा पिछले 28 वर्षों से सर्दियों में मनाए जाते 28वें जनकल्याण दिवस पर जरूरतमंदों को कम्बल वितरित किए गए। इस दौरान अनुपम प्ले-वे स्कूल के बच्चों ने एक गीत के जरिए उपस्थित लोगों का मनमोह लिया। इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री एवं आर्य समाज नवांशहर के प्रधान श्री प्रेम कुमार भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज नवांशहर हमेशा ही जन कल्याण के कार्यों में आगे रहा है तथा महर्षि दयानन्द ने कुरीतियों के खिलाफ व समाज के सुधार के लिए जो मिशन शुरू किया, उसे बाखूबी आगे बढ़ा रहा है।

श्री प्रेम कुमार भारद्वाज ने कहा कि महर्षि दयानंद जी ने समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए अनथक प्रयास किए। पाखंड के खिलाफ आंदोलन चलाया व समाज को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज नवांशहर भी महर्षि दयानंद की शिक्षाओं पर चलते हुए पिछले लगभग 110 सालों से इलाके के लोगों की सेवा कर रहा है। शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिए नवांशहर में आठ शिक्षण संस्थाओं का संचालन कर रहा है तथा समय समय पर समाजसेवा के अन्य कार्यों में भी आगे रहता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज नवांशहर द्वारा युवाओं को आगे लाने का जो प्रयास पिछले कुछ सालों में किया गया था, उसके सार्थक परिणाम निकले हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को आर्य समाज के काम से जोड़े बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते तथा हमारे संतों महापुरूषों ने भी युवाओं की भागेदारी को अहम माना है।

वार्षिक उत्सव के तहत शनिवार शाम को भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें भजनोपदेशक अरूण जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन से जुड़े सुंदर भजन प्रस्तुत किए। तद्उपरांत आचार्य रामानंद जी ने मां व बेटे के रिश्ते पर प्रवचन देने हुए कहा कि बेटा वही बनता है, जो मां-बाप उसे संस्कार देते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी युवा पीढ़ी या आने वाली पीढ़ी अच्छी बने इसके लिए जरूरी है कि अभिभावक अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें। उन्होंने कहा कि हमें मन, वचन व कर्म से श्रेष्ठ बनने के लिए प्रयास करने चाहिए। देर रात तक चली इस भजन संध्या व प्रवचन का लोगों ने खूब आनंद उठाया।

इस मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री सुरिंदर मोहन तेजपाल, आर्य समाज नवांशहर के मंत्री जिया लाल शर्मा, विनोद भारद्वाज, वीरेन्द्र सरीन, अरूणेश शर्मा, ललित शर्मा, देशबंधु भल्ला, अरविंद नारद, एडवोकेट अमित शर्मा, प्रिंसिपल एसके बारिया, प्रिसिपल मीनाक्षी शर्मा, प्रिंसिपल आशा शर्मा, प्रिंसिपल राजिन्द्र सिंह गिल, डायरेक्टर अचला भल्ला, प्रो. एसके बरूटा, एडवोकेट जेके दत्ता, विकास नारद, प्रि. प्रवीण मल्होत्रा, कृष्ण गोयल, कुलवंत राय शर्मा, विकास कुमार, बख्तावर सिंह, अक्षय तेजपाल, कुलवंत राय शर्मा, मीना भारद्वाज, नीतू तनेजा, संगीता तेजपाल, नीरू नारद, मनोज कंडा आदि उपस्थित थे।

वार्षिक उत्सव के दूसरे दिन सुबह हवन यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्री वीरेन्द्र कुमार सरीन व कृष्णा सरीन मुख्य यज्ञमान के रूप में शामिल हुई। हवन यज्ञ के उपरांत झंडा लहराने की रस्म आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने की। तदोपरांत स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर भजनीक श्री अरूण जी ने भजन प्रस्तुत किए, जिसके बाद आचार्य रामानंद जी ने स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह स्वामी दयानन्द जी का ही असर था, जिसने स्वामी श्रद्धानंद जी को समाज सुधार के कामों के लिए प्रेरित किया। हरिद्वार में जंगल में मंगल कर उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की, जहां से न जाने कितने ही लोगों में शिक्षा ग्रहण कर महर्षि दयानंद जी के काम को आगे बढ़ाया।

दोआबा आर्य सी.सै.स्कूल में हुए इस आयोजन के दौरान सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने आए हुए सभी मेहमानों को स्वामी जी द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रण दिलवाया तथा कहा कि आर्य समाज नवांशहर व आर्य समाज से जुड़ी सभी संस्थाएं ऋषि दयानंद जी के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए काम करती रहेंगी। इस दौरान स्कूल प्रबंधक कमेटी के प्रधान श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल व आर्य समाज के उपाध्यक्ष श्री विनोद भारद्वाज ने भी अपने विचार पेश किए। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के विद्यार्थियों ने सभ्याचार कार्यक्रम के जरिए जहां आर्य समाज से जुड़े विद्वानों के जीवन पर प्रकाश डाला वहीं समाज में फैली कुरीतियों पर भी चोट की। इस कार्यक्रम को उपस्थित लोगों ने खूब सराहा। प्रिंसिपल राजिन्द्र सिंह गिल ने सभी का आभार व्यक्त किया। मौके पर ललित शर्मा, ललित मोहन पाठक, एडवोकेट देशबंधु भल्ला, जे.के दत्ता, जिया लाल शर्मा, अमित शर्मा, अरविंद नारद, अक्षय तेजपाल, पंकज तेजपाल, संत कुमार जैन, सतिन्द्र सिंह, सतीश शर्मा, सतपाल उम्मट आदि उपस्थित थे।

-अरविन्द नारद प्रचार मंत्री आर्य समाज, नवांशहर

हे मन चल तू!

विद्यासागर शास्त्री आदर्श नगर 533/11 कैथल

भक्ति भरा सज्जन का पथ वर,
भव से मुक्ति मिले जिस पथ पर।
जननिन्दित तज पग शुभ पथ धर॥
जनपूजित पथ पर दृढ़ गति
सब विघ्न कर। बन अविचल तू।।
पाप वासना की जननी पाप बुद्धि से
नित ही डर कर दूर विचर मन!
नीति यही वर।
सार विचार हृदय में हितकर
भर अविरल तू! हे मन चल तू!

वेद वरेण्य विचार वरा कर

मगनामृत को अधर धरा कर, आत्म साक्ष्य से वचन मिलकर,
बोल तोलकर सत्य तुलां पर, मत कर छल तू। हे मन चल तू!
मधुगुणसंचय शील भ्रमर बन, स्नेह ज्योति का स्नेह अमर बन,
पर दुःख का अनवद्य विदुर बन, विनय हृदय भर मधुर मधुर बन,
मत बन खल तू! हम मन चल तू!

www.thearyasamaj.org
 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

बलिदान दिवस पर स्वामी श्रद्धानंद जी को याद किया

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिन बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री स्वर्ण शर्मा परिवार विशेष रूप से यजमान बना। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पंडित सुभाष चन्द्र जी थे जिन्होंने वैदिक मंत्रोच्चारण से हवन यज्ञ में आये यजमानों से विशेष आहुतियां डलवाईं। इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर के महामंत्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार शर्मा ने भाग लेकर स्वामी श्रद्धानंद जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। उन्होंने अपने सम्बोधन में स्वामी श्रद्धानंद जी के बारे में बताया कि स्वामी जी ने समाज सुधारक स्वतंत्रता सेनानी से पहले मुंशी राम थे। स्वामी दयानन्द जी के सम्पर्क में आकर सच्चे आर्य समाजी बने और नास्तिक से आस्तिक बन गये। उन्होंने समाज सुधार के अनेक कार्य किये। स्वामी श्रद्धानंद जी उस समय की शिक्षा पद्धति से जोकि मैकाले की शिक्षा पद्धति थी उससे संतुष्ट न थे और उन्होंने गुरुकुल शिक्षा के लिये आगे आए और गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में स्थापना की और फिर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय बना।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने से पूर्व यज्ञ करते हुए आर्य समाज के सदस्य।

इससे पूर्व आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के मंत्री श्री रणजीत आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद जी का जीवन कथनी और करणी के अनुरूप था। वे प्रारम्भ में 1888 में कांग्रेस से सम्बन्धित रहे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों की एकता के लिये बहुत कार्य किया और असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। शुद्धि सभा की स्थापना की और अछूतोद्धार का बिगुल बजाया। स्वामी श्रद्धानंद जी ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। दिल्ली के चांदनी चौक पर अंग्रेज सेना के आगे सीना तान कर खड़े हो गये। ऐसे आर्य सन्यासी को उन दिनों मुसलमानों ने 4 अप्रैल, 1919 के दिन बड़े भाई कह कर नेता मान कर सबसे बड़ी जामा मस्जिद दिल्ली के मिम्बर पर बिठा कर उनका अभूतपूर्व सम्मान किया। स्वामी जी ने मस्जिद की वेदी से त्वं हि न: पिता वसो त्वं माता शतक्रतो वभूविथ। अधाते सुम्नमीमहे के वेद मंत्र से शुरू किया और ओ३म् शान्ति: शान्ति: के साथ अपना उपदेश समाप्त किया।

इस अवसर पर श्री ईश्वर चन्द्र रामपाल, दीपक अग्रवाल, श्री रणजीत आर्य, चौ.हरि चन्द, राकेश प्रिंस, रमेश मुटरेजा, हर्ष लखनपाल, मोहन लाल, राजीव शर्मा, विजय लक्ष्मी शर्मा, पूनम मेहता, अनु आर्य, दिव्या आर्य, श्रीमती सरिता आर्य, सोनू शर्मा, भारती शर्मा, पूनम शर्मा, परमजीत कुमार, कृष्ण लाल, रविन्द्र आर्य, श्री राजेश कुमार, गंगा तिवारी, विनोद तिवारी, कमल कुमार, संगीता तिवारी, तिलक राज सहित कई लोग शामिल हुये।

आर्य समाज गुरदासपुर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में दो दिवसीय वेद प्रचार व वैदिक उत्सव बड़ी शान व धूमधाम से मनाया गया । इस कार्यक्रम में प्रथम दिन के कार्यक्रम की अध्यक्षता आदरणीय नीलम महन्त चेयरपर्सन गुरदासपुर योजना बोर्ड के द्वारा की गई। सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न किया गया, उसके पश्चात झंडा लहराने की कार्यवाही हुई फिर सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन हुए। रात्रि कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमन अग्रवाल जी ने की। मुख्य अतिथि ने प्रबन्धकों की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार के कार्यक्रमों की महानता पर जोर दिया। अगले दिन कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. स्वतन्त्र कुमार मुरघई उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। उनके साथ श्री परविन्द्र चौधरी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विशेष रूप से पधारे। गुरदासपुर आर्य समाज के प्रधान और कार्यक्रम के संयोजक देवेन्द्र नंदा ने अतिथियों का स्वागत किया। श्री स्वतन्त्र कुमार जी मुरघई ने अपने भाषण द्वारा श्रोताओं को समाज के लिए क्या करना चाहिए इस विषय पर अपने विचार रखे। स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमति ज्योति नंदा और आर्य समाज के प्रधान देवेन्द्र नंदा जी ने अपने भजनों द्वारा समय बांध दिया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र नंदा जी ने सबका धन्यवाद करते हुए गणमान्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज के सदस्यों ने यह बहुत ही सराहनीय कार्य किया कि निर्धन व बेसहारा लोगों को सर्दी से बचने के लिए 100 कम्बल वितरित किए गए और इसके साथ ही ऋषि लंगर का अटूट प्रबन्ध किया गया।

आर्य समाज गुरुकुल विभाग गुरदासपुर के वार्षिक उत्सव में श्री स्वतन्त्र कुमार जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री परविन्द्र चौधरी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पधारने पर स्वागत करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र नन्दा जी एवं आर्य समाज के अन्य सदस्य।

-देवेन्द्र नन्दा प्रधान आर्य समाज गुरदासपुर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।